भाषा और आधुनिकता

(1) यदि यह नवीनीकरण सिर्फ कुछ पंडितों की व आचार्यों की दिमागी कसरत ही बनी रहे तो भाषा गतिशील नहीं होती। भाषा का सीधा सम्बन्ध प्रयोग से है और जनता से है। यदि नए शब्द अपने उद्गम-स्थान में ही अड़े रहें और कहीं भी उनका प्रयोग किया नहीं जाए तो उसके पीछे के उद्देश्य पर ही कुठाराघात होगा। इसके लिये यूरोपीय देशों में प्रेषण के कई माध्यम है; श्रव्य दृश्य विधान, वैज्ञानिक कथा साहित्य आदि। हमारी भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक कथा साहित्य प्रायः नहीं के बराबर है। किसी भी नये विधान की सफलता जनता की सम्मति व असम्मति के आधार पर निर्भर करती है, और जनता में इस चेतना को उजागर करने का उत्तरदायित्व शिक्षित समुदाय एवं सरकार का होना चाहिए।

1. **भाषा का सीधा सम्बन्ध किससे है?**
   उत्तर- भाषा का सीधा सम्बन्ध प्रयोग एवं जनता से है।
2. **नए शब्दों के प्रयोग न किए जाने पर क्या परिणाम होगा?**
   उत्तर- नए शब्दों के प्रयोग न किए जाने पर उसके पीछे के उद्देश्य पर कुठाराघात होगा।
3. **गद्यांश में प्रयुक्त भाषा-शैली बताइए।**
   उत्तर- भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है। शैली विवेचनात्मक है।
4. **'कुठाराघात' का आशय स्पष्ट कीजिए।**
   उत्तर- कुठाराघात शब्द से आशय है कि भाषा जिस दिन स्थिर हो गई, उसी दिन से उसमें क्षय आरम्भ हो जायेगा।
5. **यूरोपीय देशों में शब्द प्रेषण के माध्यम कौन-कौन से हैं?**
   उत्तर- यूरोपीय देशों में शब्द प्रेषण के माध्यम हैं श्रव्य-दृश्य विधान, वैज्ञानिक कथा साहित्य आदि।
6. **लेखक के अनुसार नए शब्दों का प्रयोग न किए जाने पर क्या परिणाम होगा?**
   उत्तर- लेखक के अनुसार यदि नये शब्द अपने उद्गम स्थान पर ही अड़े रहें और कहीं भी उनका प्रयोग किया न किया जाये तो उसके पीछे के उद्देश्य पर ही कुठाराघात होगा।
7. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**
   उत्तर- जो भाषा जितनी अधिक जनता द्वारा स्वीकार एवं परिवर्तित की जाती है, वह उतनी ही अधिक जीवन्त एवं चिरस्थायी होती है। भाषा गतिशील होती है, वह अभिव्यक्ति का एक माध्यम है जिससे लोगों के बीच संवाद स्थापित होता है। उसका सीधा संबंध लोगों में प्रयोग करने से है और जनता के बीच बातचीत करने से है।
8. **पाठ का शीर्षक और लेखक का नाम लिखिए।**
   उत्तर- **शीर्षक**- भाषा और आधुनिकता, **लेखक**- प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी।

(2) "भाषा स्वयं संस्कृति का एक अटूट अंग है। संस्कृति परम्परा से निःसृत होने पर भी परिवर्तनशील और गतिशील है। उसकी गति विज्ञान की प्रगति के साथ जोड़ी जाती है। वैज्ञानिक आविष्कारों के प्रभाव के कारण अद्भूत नयी सांस्कृतिक हलचलों को शाब्दिक रूप देने के लिए भाषा के परम्परागत प्रयोग पर्याप्त नहीं हैं। इसके लिए नये प्रयोगों की नयी भाव-योजनाओं को व्यक्त करने के लिए नये शब्दों की खोज की महती आवश्यकता है।

1. **संस्कृति की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।**
   उत्तर- संस्कृति परम्परा से निःसृत होने पर भी परिवर्तनशील और गतिशील है।
2. **नए शब्दों की खोज की आवश्यकता क्यों होती है?**
   उत्तर- नयी प्रयोगों के नयी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए नये शब्दों की खोज की आवश्यकता होती है।
3. **'उद्भूत' और 'परम्परागत' का अर्थ लिखिए।'**
   उत्तर- 'उद्भूत' का अर्थ उत्पन्न और 'परम्परागत' का अर्थ परम्परा से चला आना है।
4. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**
   उत्तर- भाषा किसी भी संस्कृति का महत्त्वपूर्ण अंग होती है। क्योंकि भाषा का निर्माण समाज के द्वारा किया जाता है। भाषा अभिव्यक्ति का महत्त्वपूर्ण साधन है। संस्कृति की रचना और विकास परम्पराओं द्वारा होता है। परम्पराएँ क्योंकि परिवर्तनशील होती हैं, इसलिए संस्कृति भी एक जैसी नहीं रहती, वह भी परम्पराओं की तरह बदलती रहती है। इस रूप में हम कह सकते हैं कि संस्कृति गतिशील होती है।
   आज जिस तरह से नये-नये वैज्ञानिक आविष्कार हो रहे हैं उसके कारण उद्भूत नयी सांस्कृतिक हलचल को शाब्दिक रूप देने के लिए परम्परागत भाषा का प्रयोग पर्याप्त नहीं है।
5. **उपर्युक्त गद्यांश के पाठ का शीर्षक और लेखक का नाम लिखिए।**
   उत्तर- **शीर्षक**- भाषा और आधुनिकता, **लेखक**- प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी।
9. **भाषा किसका अटूट अंग है?**
   उत्तर- भाषा संस्कृति का अटूट अंग है।
10. **गद्यांश में प्रयुक्त भाषा-शैली बताइए।**
    उत्तर- भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है। शैली विवेचनात्मक है।
11. **किसकी गति विज्ञान की प्रगति के साथ जोड़ी जाती है?**
    उत्तर- संस्कृति की गति विज्ञान की प्रगति के साथ जोड़ी जाती है।

www.gyansindhuclasses.com

12. सांस्कृतिक हलचलें किसके लिए पर्याप्त नहीं हैं?
उत्तर- सांस्कृतिक हलचलों को शाब्दिक रूप देने के लिए भाषा के परम्परागत प्रयोग पर्याप्त नहीं है।

13. भाषा परिवर्तनशील क्यों है?
उत्तर- भाषा समाज द्वारा निर्मित है, समाज में समय-समय पर परम्पराएं रीतियां एवं मूल्य आदि परिवर्तित होते हैं जिसके कारण भाषा में परिवर्तन होना स्वाभाविक है।

14. उपर्युक्त गद्यांश में किस प्रसंग का प्रतिपादन किया गया है?
उत्तर- प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने संस्कृति के विकास में भाषा के महत्त्व को प्रतिपादित किया है।

15. भाषा किसका अभिन्न अंग है और क्यों?
उत्तर- भाषा संस्कृति का अभिन्न अंग है, क्योंकि संस्कृति की अभिव्यक्ति का माध्यम भाषा ही है।

16. प्रस्तुत के गद्यांश माध्यम से लेखक ने किस बात पर बल दिया है?
उत्तर- प्रस्तुत गद्यांश के माध्यम से लेखक ने विज्ञान की प्रगति के कारण जो सांस्कृतिक परिवर्तन होता है उसे शब्दों द्वारा अभिव्यक्त करने के लिए भाषा में नए प्रयोग की आवश्यकता पर बल दिया है।

www.gyansindhuclasses.com

(3) **"भाषा की साधारण इकाई शब्द है। शब्द के अभाव में भाषा का अस्तित्व ही दुरूह है। यदि भाषा में विकसनशीलता शुरू होती है तो शब्दों के स्तर पर ही। दैनंदिन सामाजिक व्यवहारों में हम कई ऐसे नवीन शब्दों का इस्तेमाल करते हैं, जो अंग्रेजी, अरबी, फारसी आदि विदेशी भाषाओं से उधार लिये गये हैं। वैसे ही नये शब्दों का गठन भी अनजाने में अनायास ही होता है। ये शब्द अर्थात उन विदेशी भाषाओं से सीधे अविकृत ढंग से उधार लिए गए शब्द, भले ही कामचलाऊ माध्यम से प्रयुक्त हों, साहित्यिक दायरे में कदापि ग्रहणीय नहीं। यदि ग्रहण करना पड़े तो उन्हें भाषा की मूल प्रकृति के अनुरूप साहित्यिक शुद्धता प्रदान करनी पड़ती है।"**

1. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
उत्तर- लेखक कहता है कि शब्द किसी भी भाषा की मूलभूत इकाई है। शब्द के अभाव में भाषा का विकास और उसका अस्तित्व ही सम्भव नही है। बिना शब्दों के भाषा के विभिन्न पक्षों का विकास कर पाना अत्यन्त कठिन कार्य है। यहाँ तो भाषा के विकास की दिशा में जो भी प्रयास किए जाते हैं, वे भी शब्दों के रूप में ही होते हैं। भाषा का समस्त व्याकरणिक एवं प्रायोगिक पक्ष; शब्दों की आधारशिला पर ही विकसित होता है।

2. प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने क्या स्पष्ट करने का प्रयास किया है?
उत्तर- प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि शब्द के अभाव में भाषा का अस्तित्व अस्पष्ट रहता है।

3. गद्यांश का शीर्षक एवं लेखक का नाम बताइये।
उत्तर- शीर्षक- भाषा और आधुनि लेखक प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी

4. शब्द के अभाव में भाषा का अस्तित्व कैसा है?
उत्तर- शब्द के अभाव में भाषा का अस्तित्व 'दुरुह' है। यदि भाषा में विकासशीलता शुरू होती है तो शब्दों के स्तर पर ही।

17. गद्यांश में प्रयुक्त भाषा-शैली बताइए।
उत्तर- भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है। शैली विवेचनात्मक है।

5. दैनंदिन सामाजिक व्यवहारों में हम किन भाषाओं के शब्दों का प्रयोग करते हैं?
उत्तर- दैनंदिन सामाजिक व्यवहारों में हम ऐसे नवीन शब्दों का प्रयोग करते हैं, जो अंग्रेजी, अरबी, फारसी आदि विदेशी भाषाओं से उधार लिये गये हों।

18. भाषा की विकासशीलता कैसे शुरू होती है?
उत्तर- भाषा की विकासशीलता शब्दों के स्तर पर ही शुरू होती है।

19. 'अविकृत ढंग' और 'मूल प्रकृति' का क्या आशय है?
उत्तर- 'अविकृत ढंग' का आशय बिना किसी विकार के अर्थात् मूलरूप में और 'मूल प्रकृति' का आशय मुख्य स्वभाव है।

20. साहित्यिक दायरे में विदेशी भाषा के शब्दों को किस रूप में ग्रहण करना पड़ता है?
उत्तर- साहित्यिक दायरे में विदेशी भाषा के शब्दों को भाषा की मूल प्रकृति के अनुसार उनको शुद्धता प्रदान करके ग्रहण करना पड़ता है।

21. किसके अभाव में भाषा का अस्तित्व ही दुरूह है?
उत्तर- शब्द के अभाव में भाषा का अस्तित्व ही दुरूह है।

22. नए शब्दों का गठन कैसे होता है?
उत्तर- नए शब्दों का गठन सामाजिक व्यवहारों के समय-अनुसार में अनायास ही होता है।

www.gyansindhuclasses.com

23. किन विदेशी भाषाओं से शब्द लेकर हम नए शब्दों का इस्तेमाल करते हैं?
उत्तर- अंग्रेजी, अरबी, फारसी आदि विदेशी भाषाओं से शब्द लेकर हम नए शब्दों का इस्तेमाल करते हैं।

24. भाषा की साधारण इकाई क्या है?
उत्तर- भाषा की साधारण इकाई शब्द है।

25. 'दैनंदिन' और 'अनायास' शब्दों का अर्थ लिखिए।
उत्तर- **'दैनंदिन'** शब्द का अर्थ है- 'प्रतिदिन या लगातार' और **'अनायास'** शब्द का अर्थ है-'बिना प्रयत्न के' या 'सरलता से'।

(4) रमणीयता और नित्य नूतनता अन्योन्याश्रित हैं, रमणीयता के अभाव में कोई भी चीज मान्य नहीं होती। नित्यनूतनता किसी भी सर्जक की मौलिक उपलब्धि की प्रामाणिकता सूचित करती है और उसकी अनुपस्थिति में कोई भी चीज वस्तुतः जनता व समाज के द्वारा स्वीकार्य नहीं होती। सड़ी-गली मान्यताओं से जकड़ा हुआ समाज जैसे आगे बढ़ नहीं पाता, वैसे ही पुरानी रीतियों और शैलियों की परम्परागत लीक पर चलने वाली भाषा भी जन चेतना को गति देने में प्रायः असमर्थ ही रह जाती है। भाषा समूची युग-चेतना की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है और ऐसी सशक्ता तभी वह अर्जित कर सकती है जब वह अपने युगानुकूल सही मुहावरों को ग्रहण कर सके। भाषा सामाजिक भाव -प्रकटीकरण की सुबोधता के लिए ही अतिरिक्त उसकी जरूरत ही सोची नहीं जाती।

1. **सर्जक की मौलिक उपलब्धि का प्रमाण क्या हैं?**
   उत्तर- सर्जक की मौलिक उपलब्धि का प्रमाण नित्य नूतनता है। उसकी अनुपस्थिति में कोई भी चीज वस्तुतः जनता व समाज के द्वारा स्वीकार्य नहीं होती।
2. **किससे जकड़ा हुआ समाज आगे बढ़ नहीं पाता?**
   उत्तर- सड़ी-गली मान्यताओं से जकड़ा हुआ समाज आगे नहीं बढ़ पाता।
3. **'रमणीयता' और 'उद्दिष्ट' शब्दों का अर्थ स्पष्ट कीजिए।**
   उत्तर- **रमणीयता-** सुन्दरता, **उद्दिष्ट-** उद्देश्य रखने वाली।

www.gyansindhuclasses.com

26. **गद्यांश में प्रयुक्त भाषा-शैली बताइए।**
    उत्तर- भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है। शैली विवेचनात्मक है।
4. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**
   उत्तर- जो वस्तु रमणीय होगी, वह नवीन भी होगी, उसमें रमणीयता भी रहेगी। इस प्रकार नवीनता और रमणीयता एक-दूसरे पर आश्रित हैं। अतः रमणीयता की अनुपस्थिति में कोई भी चीज अमान्य होती है।
   आगे लेखक ने स्पष्ट किया है कि भाषा समस्त युग चेतना की अभिव्यक्ति करने का सशक्त माध्यम है और कोई भी भाषा ऐसी सशक्तता तभी प्राप्त कर सकती है जब वह अपने युग के अनुरूप सटीक तथा नवीन मुहावरों को ग्रहण कर सके।
5. **उपर्युक्त गद्यांश के पाठ का शीर्षक और लेखक का नाम लिखिए।**
   उत्तर- **उपर्युक्त।**
6. **युग चेतना की सशक्त अभिव्यक्ति का साधन क्या है?**
   उत्तर- युग-चेतना की सशक्त अभिव्यक्ति का साधन भाषा है।
7. **'अन्योन्याश्रित' और 'परम्परागत' शब्दों का अर्थ स्पष्ट कीजिए।**
   उत्तर- 'अन्योन्याश्रित' का अर्थ है- एक-दूसरे पर आश्रित । परम्परागत का अर्थ-परम्परा से चले आए।
8. **रमणीयता और नित्य नूतनता किस प्रकार अन्योन्याश्रित हैं?**
   उत्तर- भाषा और नवीनता ही उसकी सुन्दरता और रमणीयता की द्योतक है। जो वस्तु रमणीय होगी, वह नवीन भी होगी, उसमें रमणीयता भी रहेगी। इस प्रकार नवीनता और रमणीयता एक-दूसरे पर आश्रित हैं।
9. **नित्य नूतनता क्या सूचित करती है?**
   उत्तर- नित्य नूतनता किसी भी रचनाकार की मौलिक उपलब्धि की प्रामाणिकता को सूचित करती है।
10. **कैसी भाषा जनचेतना को गति देने में प्रायः असमर्थ ही रह जाती है?**
    उत्तर- पुरानी रीतियों, परम्पराओं और शैलियों से जकड़ी हुई भाषा समाज में आदर प्राप्त नहीं कर सकती; क्योंकि वह युग के अनुरूप जन-चेतना उत्पन्न करने में असमर्थ रहती है।
11. **लेखक के अनुसार भाषा किसका और कैसा माध्यम है?**
    उत्तर- भाषा समूची युग चेतना की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। सभ्यता, संस्कृति और ज्ञान के विकास के फलस्वरूप जो वैचारिक क्रान्ति होती है, जिसे हम युग-चेतना के नाम से जानते हैं, उसकी सफल अभिव्यक्ति का एकमात्र सशक्त माध्यम भाषा ही है।
12. **उपर्युक्त गद्यांश में लेखक ने किस बात पर बल दिया है?**
    उत्तर- प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने इस बात पर बल दिया है कि जिस प्रकार सौन्दर्य में नवीनता होनी चाहिए, उसी प्रकार भाषा में नवीनता आती रहनी चाहिए।
13. **लेखक ने किसे अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम माना है?**
    उत्तर- लेखक ने भाषा को युग चेतना की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम माना है।

(5) विज्ञान की प्रगति के कारण नयी चीजों का निरन्तर आविष्कार होता रहता है। जब कभी नया आविष्कार होता है, उसे एक नयी संज्ञा दी जाती है। जिस देश में उसकी सृष्टि की जाती है वह देश उस आविष्कार के नामकरण के लिए नया शब्द बनाता है, वही शब्द प्रायः अन्य देशों में बिना परिवर्तन के वैसे ही प्रयुक्त किया जाता है। यदि हर देश उस चीज के लिए अपना- अपना अलग नाम देता रहेगा, तो उस चीज को समझने में ही दिक्कत होगी, जैसेकृ रेडियो, टेलीविजन, स्पूतनिक ।

www.gyansindhuclasses.com

1. **उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।**
   उत्तर- सन्दर्भ-प्रस्तुत गद्यांश **'प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी'** द्वारा लिखित **'भाषा और आधुनिकता'** नामक निबन्ध से संकलित है।
2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**

उत्तर- **रेखांकित अंश की व्याख्या-** भाषा में नवीनता का गुण होना आवश्यक है, किन्तु भाषा के नवीनीकरण अथवा शुद्धीकरण का यह आशय नहीं है कि हम दूसरी भाषा से आए प्रत्येक शब्द में परिवर्तन का प्रयास करे। यदि कोई विदेशी भाषा का शब्द अपना भाव सम्पोषित करने में सक्षम है तो उसमें परिवर्तन करने का प्रयास करना उचित नहीं है। उदाहरण के लिए: आज प्रत्येक देश में विज्ञान के क्षेत्र में विभिन्न आविष्कार हो रहे हैं और उन्हें नए-नए नाम दिए जा रहे हैं। प्रत्येक देश अपने यहाँ की आविष्कृत वस्तु का अपनी भाषा के अनुसार नामकरण करता है और दूसरे देशों में भी वही नाम प्रचलित हो जाता है। यदि हर एक देश इन वस्तुओं का नामकरण अपने अनुसार करने लगे तो इन्हें समझने में अनेक प्रकार की कठिनाइयों उत्पन्न हो जाएँगी।

3. **कौन सा देश किसी आविष्कृत चीज के नामकरण को नया शब्द देता है?**
   उत्तर- जिस देश में नयी चीज आविष्कृत होती है, वह देश उसके नामकरण के लिए एक नया शब्द देता है।
4. **यदि हर देश आविष्कृत चीजों का अपना-अपना अलग नाम देता रहे तो क्या होगा?**
   उत्तर- यदि हर देश आविष्कृत चीजों का अपना-अपना अलग नाम देता रहे तो उस चीज को समझने में दिक्कत होगी।
5. **गद्यांश में प्रयुक्त भाषा-शैली बताइए।**
   उत्तर- भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है। शैली विवेचनात्मक है।
6. **नई चीजों के आविष्कार होने का क्या कारण है?**
   उत्तर- नई चीजों के आविष्कार होने का कारण विज्ञान की प्रगति है।

www.gyansindhuclasses.com

(6) **नये शब्द, नये मुहावरे एवं नयी रीतियों के प्रयोगों से युक्त भाषा को व्यावहारिकता प्रदान करना ही भाषा में आधुनिकता लाना है। दूसरे शब्दों में केवल आधुनिक युगीन विचारधाराओं के अनुरूप नये शब्दों के गढ़ने मात्र से ही भाषा का विकास नहीं होता, वरन् नये पारिभाषिक शब्दों को एवं नूतन शैली-प्रणालियों को व्यवहार में लाना ही भाषा को आधुनिकता प्रदान करना है।**

1. **गद्यांश का शीर्षक एवं लेखक का नाम बताइये।**
   उत्तर- **शीर्षक-** भाषा और आधुनिकता, **लेखक-** प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी।
2. **प्रस्तुत गद्यांश में लेखक का क्या मानना है?**
   उत्तर- प्रस्तुत गद्यांश में लेखक का मानना है कि भाषा में आधुनिकता लाने के लिए आवश्यक है कि उसमें नए-नए शब्दों तथा मुहावरों को, नई शैलियों को अपनाया जाय।
3. **लेखक भाषा को अपनाने पर क्या बल देता है?**
   उत्तर- लेखक भाषा को किए जाने वाले सभी परिवर्तनों का सम्बन्ध व्यावहारिक धरातल से रहना अति आवश्यक बताता है। लेखक का मानना है कि व्यावहारिकता ही भाषा का प्राण तत्व है।
4. **भाषा का विकास कब नहीं होता?**
   उत्तर- आधुनिक विचारधाराओं के अनुरूप अनेक व्यक्ति नवीन शब्दों का प्रयोग करना ही भाषा के विकास की दृष्टि से पर्याप्त मानते हैं, परन्तु इस प्रकार की धारणा उचित नहीं है। इस प्रकार से भाषा का विकास नहीं होता।
5. **'रीतियों', 'नूतन', 'प्राणतत्व' का शब्दार्थ लिखिए।**
   उत्तर- शब्दार्थ इस प्रकार हैं- **रीतियों-** पद्धतियों, **नूतन** -नवीन, नई **प्राणतत्व-** आत्मा।
6. **किसके गढ़ने मात्र से भाषा का विकास नहीं होता है?**
   उत्तर- लेखक का कहना है कि केवल नवीन शब्दों को गढ़ने मात्र से भाषा का विकास नहीं होता है।
7. **प्रस्तुत गद्यांश में प्रयुक्त भाषा एवं शैली लिखिए।**
   उत्तर- भाषा संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दों से युक्त खड़ी बोली है। शैली विवेचनात्मक एवं विचारात्मक है।
8. **भाषा को व्यावहारिक बनाकर हम उसमें क्या परिवर्तन ला सकते हैं?**
   भाषा को व्यावहारिक बनाकर हम उसे आधुनिक बना सकते हैं।
9. **भाषा को आधुनिकता प्रदान करने हेतु क्या आवश्यक है?**
   उत्तर- भाषा को आधुनिकता प्रदान करने हेतु यह आवश्यक है कि हम नवीन पारिभाषिक शब्दों एवं नवीन लेखन शैलियों पर आधारित लेखन-पद्धतियों द्य का प्रयोग करें।
10. **भाषा का प्राणतत्त्व क्या है?**
    उत्तर- भाषा की व्यावहारिकता ही उसका प्राणतत्त्व होती है। जो भाषा व्यावहारिकता को त्यागी देती है, उसका शीघ्र ही अन्त हो जाता है।
11. **गद्यांश में प्रयुक्त भाषा-शैली बताइए।**
    उत्तर- भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है। शैली विवेचनात्मक है।
12. **किसके प्रयोग से भाषा में आधुनिकता लायी जा सकती है?**
    उत्तर- भाषा में आधुनिकता लाने के लिए यह आवश्यक है कि हम नवीन पारिभाषिक शब्दों एवं नवीन लेखन शैलियों पर आधारित लेखन पद्धतियों को प्रयुक्त करें।
13. **उपर्युक्त गद्यांश के माध्यम से लेखक ने किन बिन्दुओं पर प्रकाश डाला है?**
    उत्तर- प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने नवीन पारिभाषिक शब्दों, नवीन मुहावरों, नवीन लेखन शैलियों आदि बिन्दुओं पर प्रकाश डाला है।

www.gyansindhuclasses.com

14. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- **रेखांकित अंश की व्याख्या**- युगानुकूल अनेक व्यक्ति नवीन शब्दों का प्रयोग करना ही भाषा के विकास की दृष्टि से पर्याप्त मानते हैं, परन्तु इस प्रकार की धारणा उचित नहीं है। केवल नवीन शब्द गढ़कर ही भाषा को आधुनिक नहीं बनाया जा सकता, वरन् भाषा को आधुनिक बनाने के लिए यह आवश्यक है कि हम नवीन पारिभाषिक शब्दों एवं नवीन लेखन-शैलियों पर आधारित लेखन पद्धतियों को प्रयुक्त करें। नवीन शब्दों एवं नवीन शैलियों को साहित्य से लेकर विद्यालयों में निर्धारित पाठ्य पुस्तकों तक प्रयुक्त किया जाना चाहिए। इस प्रकार के नवीन शब्दों एवं शैलियों को शिक्षित अथवा अशिक्षित व्यक्तियों या जहाँ से भी मिले, खोजकर भाषा में प्रयुक्त करना चाहिए। ऐसा करके ही भाषा को व्यावहारिक, आधुनिक अथवा प्रगतिशील बनाया जा सकता है।

www.gyansindhuclasses.com

हमारे YouTube चैनल पर विजिट करने के लिए अभी स्कैन करें अथवा सर्च करें
Gyansindhu Coaching Classes

ज्ञानसिन्धु कोचिंग क्लासेज
अनुशासनेन विद्या अभ्यासेन विद्या
ज्ञानात् मुक्तिः
।। ज्ञानम् मनुष्यस्य तृतीय नेत्रम् ।।

www.gyansindhuclasses.com